आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 24 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – " आज से बार-बार इस स्मृति को दोहराया ... परमात्म शक्तियाँ हमारे साथ है, हम दोनों कम्बाइण्ड है "

हमारा जन्म महान कार्य के लिए हुआ है। हम इस धरा पर भगवान के साथ अवतरित हुए है। अगर हमें यह स्मृति रहे कि हम भी अवतार है, तो हम अपने महान कार्य की स्मृति में रहेंगे।

एक शिवबाबा **अवतार** लेकर युग को बदल देता है। हम सभी आत्मायें महान चुनी हुई आत्मायें है। जो इस गुड फीलिंग में रहती है कि ..

" मैं अवतार हूँ .. जो इस देह में अवतरित हुई आत्मा हूँ .. और मैं इस संसार में पवित्रता सुख शान्ति का साम्राज्य स्थापित करने के लिए ही आई हूँ "

तो हम भी बहुत बड़े बड़े कार्य कर पायेंगे। हमारे द्वारा भी बड़े बड़े चमत्कार होंगे। युग परिवर्तन के कार्य में हम भी बहुत बड़े सहयोगी बनेंगे।

जिनको महान कार्य करने है, उन्हें निमित्त भाव धारण करना ही होगा। अहम् भाव तनिक भी न आये। क्योंकि अहम् भाव बाबा और हमारे बींच में एक दीवार बना देता है। बाबा की **शक्तियाँ** हमें नहीं मिल पाती।

और जो महान कार्य वो हमसे कराना चाहते है वह भी नहीं हो सकता। इसलिए मैं-पन को एक बहुत बड़ा विघ्न मानकर उसको समाप्त करे देना चाहिए।

बहुत सुन्दर कहानी पाण्डवों की है ...

अंत आ गया .. पाण्डवों के स्वर्ग आरोहण से पहले की घटना है ..

युधिष्ठिर को मेहसूस होने लगा कि ' मेरे धर्म की शक्ति, न्याय की शक्ति (जो उसके पास था) .. वह अब है नहीं '

भीम को मेहसूस होने लगा ' मेरा वल पता नहीं कहाँ चला गया '

उधर रास्ते में अर्जुन को भीलों ने लूट लिया ...

युधिष्ठिर ने दूत को कहा ... ' जाओ जल्दी से श्रीकृष्ण को बुलाकर लाओ .. कुछ अवसगुन हो रहा है '

दूत बहुत तेज घोड़ा दौड़ाया। बहुत जल्दी कुछ ही दिनों में वापिस लौट आया इस समाचार के साथ कि ....

" श्री कृष्ण नहीं रहे .. वो ब्रह्मलोक चले गये "

और यह बात सुनते ही पाण्डवों को मेहसूस हुआ कि .....

हमारे साथ जो शक्तियाँ काम कर रही थी वे **ईश्वरीय शक्ति थी** .. जब तक वो शक्तियाँ थी .. सब महावीर .. कोई धर्मराज .. कोई श्रेष्ठ धनुर्धारी थे .. अब वह शक्तियाँ चली गई तो खाली हो गये "

तब उन्होंने भी निर्णय लिया कि .. हमें भी स्वर्ग की ओर चलना चाहिए ""

बस यही बात सबके साथ है ....

" बाबा ने आकर हमें अपनी शक्तियाँ प्रदान कर दी है। उनके शक्तियों के द्वारा ही, उनके वल से ही हम बाबा के यह महान कार्य सम्पन्न कर रहे है। जिस दिन वो अपनी शक्तियाँ हमसे हटा लेंगे उसी दिन हमें लगेगा हम तो बिल्कुल खाली है। "

इसीलिए **मैं पन** का कहीं भी स्थान नहीं है। क्योंकि मैं पन आते ही उसकी शक्तियाँ हमसे अलग हो जाते है। उनके दुआयें, उनके वरदान हमसे अलग हो जाते है। और हम पाते है स्वयं को खाली अकेला।

इसलिए बहुत ध्यान दे। **निमित्त भाव ही धारण करना है।**

"**निमित्त, निर्माण और निर्मल**"। इसी से हम इस महान दिव्य कार्य में मुख्य भूमिका निभा सकेंगे और संसार को बहुत कुछ देकर श्रेष्ठ भाग्य के अधिकारी बन जायेंगे।

तो आज सारा दिन हम याद करेंगे ...

" मेरे साथ स्वयं परमात्म शक्तियाँ काम कर रही है .. मैं इसलिए बहुत शक्तिशाली हूँ कि उनके शक्तियाँ मुझसे कम्बाइण्ड है "

बस हम अपने इस कम्बाइण्ड स्वरूप को अपने स्मृति में रखेंगे और फ़ील करेंगे कि ....

" सर्वशक्तिमान मेरे सिर के ऊपर छत्रछाया है .. उसकी शक्तियाँ मुझमें समा रही है "

तो हर घन्टे इस अभ्यास को इस स्मृति को चालू रखेंगे ....

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org